नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

हिंद-प्रशांत में संतुलन की नई रणनीति

नई दिल्ली में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्रियों की हालिया क्वॉड बैठक ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र अब केवल व्यापार और समुद्री गतिविधियों का केंद्र नहीं, बल्कि वैश्विक भू-राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण मंच बन चुका है. बैठक में आतंकवाद के प्रति 'जीरो टॉलरेंस' की नीति, समुद्री सुरक्षा, उत्तर कोरिया के परमाणु कार्यक्रम तथा महत्वपूर्ण खनिज संसाधनों की आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित बनाने जैसे मुद्दों पर व्यापक सहमति बनी. विशेष रूप से 'इंडो-पैसिफिक मैरिटाइम डोमेन अवेयरनेस' जैसी पहलों को आगे बढ़ाने का निर्णय इस क्षेत्र में सामूहिक सुरक्षा सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जाएगा.

हिंद-प्रशांत क्षेत्र का महत्व किसी से छिपा नहीं है. विश्व व्यापार का लगभग 75 प्रतिशत और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है. दुनिया के लगभग 60 प्रतिशत समुद्री व्यापार का मार्ग भी यहीं से होकर गुजरता है. ऐसे में इस क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा केवल सदस्य देशों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक है. यही कारण है कि क्वॉड अब केवल एक रणनीतिक संवाद मंच नहीं रहा, बल्कि क्षेत्रीय संतुलन और सहयोग का प्रभावी माध्यम बनता जा रहा है.

क्वॉड की बढ़ती सक्रियता से चीन की बेचैनी भी लगातार बढ़ रही है. बीजिंग बार-बार इस मंच को 'छोटे गुटों की राजनीति' बताकर इसकी आलोचना करता रहा है. हालांकि वास्तविकता यह है कि दक्षिण चीन सागर से लेकर पूर्वी चीन सागर तक चीन की आक्रामक गतिविधियों, कृत्रिम द्वीपों के निर्माण और पड़ोसी देशों की समुद्री सीमाओं में हस्तक्षेप ने क्षेत्रीय देशों की चिंताओं को बढ़ाया है. अंतरराष्ट्रीय कानूनों और समुद्री नियमों की अनदेखी ने ही ऐसी परिस्थितियां पैदा की हैं, जिनके परिणामस्वरूप क्वॉड जैसे मंचों की आवश्यकता महसूस हुई.

क्वॉड की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि महत्वपूर्ण खनिजों, विशेषकर रेयर अर्थ मिनरल्स, की आपूर्ति श्रृंखला को लेकर साझा रणनीति तैयार करना है. वर्तमान में इन खनिजों की वैश्विक आपूर्ति में चीन का वर्चस्व है. इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा उपकरणों और उन्नत तकनीकी उत्पादों के निर्माण में इन खनिजों की केंद्रीय भूमिका है. ऐसे में वैकल्पिक आपूर्ति स्रोत विकसित करने का प्रयास सदस्य देशों की आर्थिक और तकनीकी सुरक्षा को मजबूत करेगा.

यह भी उल्लेखनीय है कि क्वॉड किसी सैन्य गठबंधन के रूप में नहीं उभरा है. इसका घोषित उद्देश्य स्वतंत्र, मुक्त, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत व्यवस्था को प्रोत्साहित करना है. भारत के लिए क्वॉड का महत्व और भी अधिक है. एक ओर यह देश की समुद्री सुरक्षा को मजबूत करता है, वहीं दूसरी ओर वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं, तकनीकी सहयोग और आर्थिक साझेदारी के नए अवसर भी प्रदान करता है. क्वॉड की नई पहलें इस दिशा में सकारात्मक संकेत देती हैं. यदि सदस्य देश अपने आर्थिक, तकनीकी और सामरिक सहयोग को इसी प्रकार आगे बढ़ाते रहे, तो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता, संतुलन और सुरक्षा का नया अध्याय लिखा जा सकता है. चीन के लिए भी यही संदेश है कि वैश्विक नेतृत्व दबाव और विस्तारवाद से नहीं, बल्कि सहयोग और नियमों के सम्मान से प्राप्त होता है.

भारत और ओमान

एक नए आर्थिक गलियारे को गति

राजेश अग्रवाल

व्यापार, प्रतिभा और विश्वास- यह सीईपीए भारतीय सेवा प्रदाताओं को उन सभी क्षेत्रों में बाध्यकारी प्रतिबद्धताएं प्रदान करता है, जहां भारत की स्थिति स्पष्ट रूप से मजबूत है .इनमें आईटी, पेशेवर सेवाएं और निर्माण क्षेत्र शामिल हैं .विभिन्न क्षेत्रों में शत-प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देने वाले प्रावधानों के साथ, भारतीय कंपनियों को ओमान में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने के अधिक मौके मिलेंगे . प्रतिभाओं की दृष्टि से भी, यह समझौता एकबड़ी उपलब्धि है . कंपनी के भीतर स्थानांतरित कर्मचारियों (इंट्रा-कॉरपोरेट ट्रांसफरी) की सीमा को 50 प्रतिशत तक बढ़ाकर, भारतीय कंपनियों को अब विशिष्टता प्राप्त कर्मचारियों को आसानी से तैनात करने तथा बाजार में अपनी मजबूत उपस्थिति को और अधिक मजबूत करने की सुविधा मिल गई है . इसके अलावा, किसी भी मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) में पहली बार, ओमान ने स्वतंत्र पेशेवरों के लिए एक समर्पित आवाजाही की व्यवस्था स्थापित की है .

भारत और ओमान के बीच वाणिज्यिक रिश्ते सदियों से चलते आ रहे हैं.दोनों देशों काएक साझा इतिहास प्राचीन नावों के पाल पर सवार होकर आगे बढ़ता रहा है और पीढ़ियों से चले आ रहे सांस्कृतिक आदान-प्रदान के जरिए कायम रहा है.भारत-ओमान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (सीईपीए) इस सभ्यतागत बंधन को और मजबूत करता है .एक ऐसे दौर में जब वैश्विक व्यापार भू-राजनैतिक प्रतिद्वंद्विताओं, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और बढ़ते संरक्षणवाद से जूझ रहा है, यह समझौता भरोसेमंद साझेदारों के साथ आर्थिक जुड़ाव को गहरा करने के भारत के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है.

वर्ष 2022 में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के साथ हुए ऐतिहासिक समझौते के बाद, यह सीईपीए खाड़ी देशों के साथ भारत की बढ़ती आर्थिक भागीदारी को मजबूती से स्थापित करता है.द्विपक्षीय व्यापार में लगातार विस्तार हुआ है और वित्त वर्ष 2025-26 में यह 11.18 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है.जबकि, सेवाओं का व्यापार 2024 में 863 मिलियन अमेरिकी डॉलर का रहा. आर्थिक रिश्तों का विविधीकरण हुआ है और इसमें परंपरागत वस्तुओं से परे इंजीनियरिंग सामान, फार्मास्यूटिकल्स और आईटी सेवाओं का समावेश हुआ है.फिर भी, काफी अनछुई संभावनाएं अभी भी बाकी हैं .वस्तुओं एवं सेवाओं के व्यापार, निवेश, पेशेवर आवाजाही और नियामकीय सहयोग को शामिल करके, यह सीईपीए अधिक सुदृढ़, समन्वित और व्यापक आर्थिक साझेदारी काएक व्यापक ढांचा तैयार करता है.

इस सीईपीए के तहत ओमान की 98.08 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर भारतीय निर्यात को शुल्क-मुक्त बाजार पहुंच हासिल है .इस समझौते से पहले, भारत के निर्यात का सिर्फलगभग 15 प्रतिशत हिस्सा ही सर्वाधिक तरजीह वाले देश (मोस्ट फेवर्ड नेशन) की व्यवस्था के तहत ओमान में 5 प्रतिशत तक का शुल्क लगता था.इस सीईपीए के तहत, भारत के वर्तमान निर्यात की 99.38 प्रतिशत मात्रा अब शुल्क-मुक्त प्रवेश का लाभ उठाएगी.

भारतीय निर्यातकों की दृष्टि से, ये लाभ काफी महत्वपूर्ण हैं. ओमान के 'विजन 2040' के तहत बुनियादी ढांचे, लॉजिस्टिक्स और औद्योगिक विविधीकरण में उसके द्वारा किए जा रहे निवेश से मांग में वृद्धि होगी .वित्त वर्ष 2024-25 में 875.83 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के इंजीनियरिंग सामानों के निर्यात के 2030 तक बढ़कर 1.3 से 1.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर के बीच होने का अनुमान है .शून्य शुल्क की सुविधा के जरिए वस्त्र एवं परिधान सेक्टर को क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धियों पर महत्वपूर्ण बढ़त मिलेगी. इससे तिरुपुर, सूरत, लुधियाना और कोयंबटूर जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी और साथ ही रोजगार भी सृजित होगा. मौके व्यापक और विविध हैं. आयात पर निर्भर ओमान का दवा बाजार भारतीय कंपनियों के लिए मजबूत संभावनाएं पेश करता है। नियामकीय मंजूरियोंमें तेजी, गुणवत्ता प्रमाणपत्रों की मान्यता और प्रमुख उत्पादों के शुल्क-मुक्त पहुंच से अनुपालन संबंधी लागत में कमी आएगी और बाजार में पैठ बढ़ेगी .चावल, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, मसाले और कन्फेक्शनरी सहित कृषि एवंखाद्य प्रसंस्करण आधारित निर्यात को भी लाभ होगा.

भारत के हालिया व्यापार समझौतों के अनुरूप, इस सीईपीए मेंएक संतुलित और सुविचारित दृष्टिकोण का समावेश है.जहां एक ओर भारत प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करने एवं वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में शामिल होने के लिए बाजारों को खोल रहा है, वहीं दूसरी ओर संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा भी सुनिश्चित कर रहा है. दुग्ध तथा अनाज जैसे प्रमुख कृषि उत्पादों के साथ-साथ रबर, वस्त्र और जूते जैसे उद्योग सुरक्षित बने हुए हैं. यह दृष्टिकोण बाहरी बाजारों तक पहुंच और घरेलू कमजोरियों से बचाव को एक साथ जोड़ता है. भारत ने ओमान से आयात होने वाले लगभग 95 प्रतिशत उत्पादों पर लागू होने वाली अपनी 77 प्रतिशत से अधिक टैरिफ लाइनों को उदार बनाने की प्रतिबद्धता जताई है.

रैंक की दौड़ में खोता बचपन

नीट/ जी का बढ़ता दबाव और भारत का मौन शैक्षणिक संकट

ओजस्कर पाण्डेय

भारत में शिक्षा को हमेशा सामाजिक उन्नति और सम्मानजनक भविष्य का सबसे मजबूत माध्यम माना गया हैध्यही कारण है कि डॉक्टर और इंजीनियर बनने का सपना आज भी करोड़ों भारतीय परिवारों की पहली पसंद बना हुआ है. हर वर्ष लाखों विद्यार्थी नीट और जी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होते हैं, लेकिन पिछले एक दशक में इन परीक्षाओं का स्वरूप केवल एक प्रवेश परीक्षा तक सीमित नहीं रहा. यह अब एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था में बदल चुका है, जहाँ बच्चों की प्रतिभा को अंकों, रैंक और कटऑफ के तराजू पर तौला जाने लगा है. आज स्थिति यह है कि एक छात्र केवल पढ़ाई नहीं करता, बल्कि वह प्रतिस्पर्धा, भय, असुरक्षा और अपेक्षाओं के बोझ के साथ जीता है. लाखों विद्यार्थी वर्षों तक कोचिंग संस्थानों में संघर्ष करते हैं, माता-पिता अपनी पूरी जमा पूंजी लगा देते हैं, और अंततः कुछ हजार सीटों के लिए करोड़ों सपनों की परीक्षा होती है. यह दबाव केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक संकट का रूप ले चुका है.

आज स्थिति यह है कि एक किशोर की पहचान उसके व्यक्तित्व, रचनात्मकता या संवेदनशीलता से नहीं, बल्कि उसके स्कोर और रैंक से तय होने लगी है. यही कारण है किनीट और जी की तैयारी अब केवल पढ़ाई नहीं, बल्कि मानसिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाओं और आर्थिक बोझ का पर्याय बनती जा रही है. राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2025 में नीट यूजी के लिए लगभग 24 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने आवेदन किया, जबकि सरकारी मेडिकल कॉलेजों में सीटों की संख्या लगभग 1.15 लाख के आसपास रही. अर्थात हर सौ विद्यार्थियों में केवल चार से पाँच छात्रों को ही सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिल पाता है.

इसी प्रकार नीट मेन में प्रतिवर्ष लगभग 12 से 14 लाख विद्यार्थी बैठते हैं, जबकि आईआईटी में कुल सीटें लगभग 18 से 20 हजार के बीच हैं.यदि केवल आईआईटी में चयन की बात करें तो सफलता प्रतिशत लगभग 1 से 2 प्रतिशत तक सीमित रह जाता है.इतनी सीमित सीटों और विशाल प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों के भीतर असफलता का भय स्थायी रूप से स्थापित कर दिया है.यह भय केवल परीक्षा हॉल तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह बच्चों की नींद, आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार तक को प्रभावित करने लगा है.

सबसे चिंताजनक बात यह है कि प्रतियोगिता की यह दौड़ अब 11वींङ्क12वीं तक सीमित नहीं रही.कई बच्चे 8वीं और 9वीं कक्षा से ही कोचिंग संस्थानों की तैयारी संस्कृति में प्रवेश कर जाते हैं.बचपन, खेल, मित्रता और सामान्य विद्यालय जीवन अब धीरे-धीरे टेस्ट सीरीज, डाउट क्लास और रैंक इम्प्रूवमेंट बैच के बीच खोता जा रहा है.शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति से हटकर केवल परीक्षा जीतने तक सिमटता जा रहा है.देश के अनेक बड़े शहरों में इंटीग्रेटेड कोर्स के नाम पर विद्यालयी शिक्षा लगभग कोचिंग संस्थानों के अधीन होती जा रही है.परिणामस्वरूप विद्यार्थी एक मशीन की तरह दिन में 12 से 16 घंटे तक पढ़ने को मजबूर हो रहे हैं. राजस्थान का कोटा इस बदलती शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा प्रतीक बन चुका है.हर वर्ष लाखों विद्यार्थी वहाँ नीट और जी की तैयारी के लिए पहुँचते हैं.कोटा की गलियाँ अब सपनों के साथ-साथ तनाव, अकेलेपन और अवसाद की कहानियाँ भी सुनाने लगी हैं. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2022 में भारत में 13 हजार से अधिक छात्र आत्महत्या के मामले दर्ज किए गए.कोटा में लगातार बढ़ती आत्महत्या की घटनाएँ पूरे देश के लिए चेतावनी बन चुकी हैं.दुखद यह है कि इन घटनाओं के बाद कुछ दिनों तक बहस होती है, संवेदनाएँ व्यक्त की जाती हैं, फिर व्यवस्था पुनः उसी पुराने ढर्रे पर लौट जाती है. दरअसल समस्या केवल परीक्षा की कठिनाई नहीं है, बल्कि उससे जुड़ी सामाजिक मानसिकता है.भारतीय समाज में डॉक्टर और इंजीनियर को आज भी सफलता का अंतिम प्रतीक माना जाता है.

आज भारत जिस युवा शक्ति पर गर्व करता है, वही युवा धीरे-धीरे मानसिक दबाव और असुरक्षा की गिरफ्त में आ रहा है .यदि शिक्षा का वातावरण बच्चों से उनका आत्मविश्वास, बचपन और मानसिक शांति छीन ले, तो ऐसी सफलता का कोई अर्थ नहीं रह जाता .हमें यह समझना होगा कि एक रैंक जीवन से बड़ी नहीं हो सकती .देश को केवल सफल डॉक्टर और इंजीनियर ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से स्वस्थ, संवेदनशील और रचनात्मक नागरिकों की भी आवश्यकता है . समय आ गया है कि भारत शिक्षा को भय और प्रतिस्पर्धा के कारखाने से निकालकर विकास, संवेदना और संतुलन का माध्यम बनाए .क्योंकि यदि बचपन ही दबाव में टूटने लगे, तो भविष्य की चमक भी अधूरी रह जाएगी .

कोहली का कमाल, आरसीबी का धमाल

आईपीएल में कितने ही वर्षों से रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को उसके अच्छे बल्लेबाजों के बावजूद शीर्ष पर पहुंचने से पहले ही हार जाने वाली टीम माना जाता था, लेकिन 2024 की नीलामी ने सब कुछ बदलकर रख दिया. एक संतुलित टीम तैयार की गई, जो पिछली न्यूनताओं को दूर करती थी. नतीजा यह निकला कि लगातार दूसरे वर्ष आरसीबी ने आईपीएल फाइनल जीतकर अपने को सर्वश्रेष्ठ साबित किया. अहमदाबाद के खचाखच भरे विशाल स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स की टीम सफलता की उम्मीद लेकर उतरी थी, लेकिन भुवनेश्वर कुमार व जोश हेजलवुड व जेकब डफी की सधी हुई गेंदबाजी ने उन्हें बड़ा स्कोर बनाने से रोका और 155 रनों पर गुजरात की पारी समाप्त हो गई. शुभमन गिल, साई सुदर्शन व हॉल्डर टिक नहीं पाए. पावर प्ले में भी गुजरात टाइटन्स केवल 45 रन बना पाई. इस टीम में सिर्फ वाशिंगटन सुंदर अच्छा खेले और 50 रन बनाकर नॉट आउट रहे. फील्डिंग के दबाव में बिना कोई बाउंड्री लगाए लगातार 40 गेंद खेलने वाली इस टीम की कमजोरी सामने आ गई. रसिख सलाम डार ने 27 रन देकर 3 विकेट लिए. आरसीबी के कप्तान रजत पाटीदार ने टीम को सफल नेतृत्व दिया. विराट कोहली ने इस हाई प्रेशर वाले फाइनल में 75 रन बनाए और नॉट आउट रहे. 18 वेंओवर की अंतिम गेंद पर छक्का जड़कर उन्होंने आरसीबी को शानदार विजय दिलाई. जब पाटीदार और कुणाल पंड्या आउट हुए तो कोहली ने पारी संभाली और स्कोर बढ़ाते चले गए. आरसीबी की विजय सिर्फ बैटिंग और गेंदबाजी में कुशलता पर ही निर्भर नहीं थी, उसकी रणनीति भी जबरदस्त रही. जब भुवनेश्वर कुमार और हैजलवुड ने देखा कि नतीजा नहीं मिल रहा है, तो तीसरे ओवर से उन्होंने आक्रामक गेंदबाजी शुरू कर लाइन व लेंथ का बेहतरीन इस्तेमाल किया.

आरसीबी की विजय सिर्फ बैटिंग और गेंदबाजी में कुशलता पर ही निर्भर नहीं थी, उसकी रणनीति भी जबरदस्त रही. जब भुवनेश्वर कुमार और हैजलवुड ने देखा कि नतीजा नहीं मिल रहा है, तो तीसरे ओवर से उन्होंने आक्रामक गेंदबाजी शुरू कर लाइन व लेंथ का बेहतरीन इस्तेमाल किया.

निशानेबाज

एकलव्य ने काटा था अपना अंगूठा अब भी परीक्षा में घोटाला अनूठा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, परीक्षाओं में हो रही धांधली से हम बहुत परेशान हैं. नीट, सीबीएससी, सीयूईटी-यूजी जैसी परीक्षाओं में कहीं पेपर लीक है तो कहीं तकनीकी या प्रशासकीय गलती! छात्रों का भविष्य दांव पर लग गया है.'

हमने कहा, 'परीक्षा में घोटाला कोई नई बात नहीं है. पहले भी बहुत कुछ होता था. द्रोणाचार्य ने अपने शिष्य अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाए रखने के लिए गुरुदक्षिणा के नाम पर एकलव्य का अंगूठा कटवा दिया था. इस अन्याय और भेदभाव के बावजूद द्रोणाचार्य के नाम पर खेल पुरस्कार दिए जाते हैं. इतना ही नहीं, युद्ध में इस्तेमाल किए जाने वाले ड्रोन भी हमें द्रोणाचार्य के युद्ध कौशल की याद दिलाते हैं, जिसका महाभारत में वर्णन है. दूसरा उदाहरण परशुराम का है, जो भीष्म और कर्ण दोनों के गुरु थे. उन्होंने अपनी पहचान छुपाने की वजह से कर्ण को शाप दिया था कि वह ऐन मौके पर अपनी शस्त्रविद्या भूल जाएगा.'

पडोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पहले क्रमेधावी शिष्यों

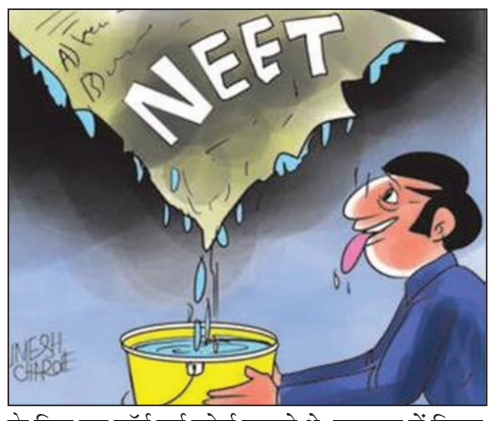

के लिए गुरु शॉर्ट टर्म कोर्स चलाते थे. रामायण में लिखा है- गुरु गृह पढ़न गए रघुराई, अल्प काल विद्या सब आई। राम के गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र थे तो कृष्ण-बलराम के गुरु सांदीपनी!'

हमने कहा, 'कहां प्राचीन भारत की गुरुकुल पद्धति और कहां आज के महंगे कोचिंग इंस्टीट्यूट ! अब तो लाखों रुपए दो और परीक्षा के पहले ही पेपर आउट करा लो. इंसान पेपर देता है और मशीन उसे जांचती है. सीबीएसई ओसीएम या ऑनस्क्रीन माकिंग सिस्टम से आंसर शीट जांचता है. परीक्षा प्रणाली की प्रामाणिकता संदेह के घेरे में आ गई है. यूनिवर्सिटी भी किसी एजेंसी को ठेका देकर उससे पेपर जंचवाती है जबकि परीक्षक मुंह ताकते रह जाते हैं. छात्र की स्थिति देखकर कहना पड़ता है कि अभिमन्यु चक्रव्यूह में फंस गया है तू.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, परीक्षा को उर्दू में इम्तिहान कहते हैं. आपने गीत सुना होगा जिंदगी इम्तिहान लेती है, आशिकों की जान लेती है! अब आशिक की जान नहीं, बल्कि छात्रों का भविष्य खतरे में है. भगवान कृष्ण ने अश्वत्थामा के ब्रम्हास्त्र से उत्तरा के गर्भ में पल रहे परीक्षित की प्राणरक्षा की थी. आज परीक्षा देने वाले ईमानदार छात्रों को बेईमानी और भ्रष्टाचार से कौन बचाएगा?'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12277 - डॉ. सागर खादीवाला

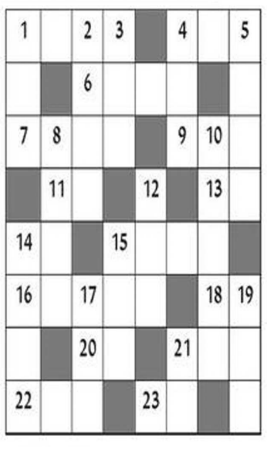

बाएं से दाएं
1. ऊंचे पहियों की एक प्रकार की घोड़ागाड़ी 4. नाम पर, किसी के प्रति, नाम पर का नाम (उर्दू) 6. वह मटका जिसमें दही मथा जाता है 7. झुकना, लटकना, नीचे खिसकना 9. नमस्कार, झुकने की क्रिया या भाव 11. निषिद्ध, वर्जित 13. अहाता, रोक 14. स्त्रियों के बालों की गुंथी हुई चोटी 15. नखरे, हाथ या आंख नचाना 16. भय या घबराहट के कारण कलेजे का जल्दी से धड़कना, धधकना 18. बूंद टपकने का शब्द 20. कमरा, बड़ी कोठी 21. अनुकृति, अनुकरण, प्रतिलिपि (उर्दू) 22. सुयोग्यता, उपयुक्तता 23. गौरैया के आकार का एक पक्षी जिसका माथा पीला होता है

ऊपर से नीचे
1. भेजी जाने वाली चिट्ठी पत्री, डाक 2. टीस होना 3. किसी तरल पदार्थ को लकड़ी, रई आदि से बिलोना 4. वक्तव्य, वर्णन (उर्दू) 5. बड़प्पन, महत्ता 8. सुंदर, मनोहर 10. एक प्रकार का बड़ा नाटक जिसमें दस अंक होते हैं 12. छुरी-कैंची आदि से किसी वस्तु के टुकड़े करना, कतरना, मार्ग तय करना 14. वह स्थान जहां ग्रहों-तारों आदि की गतिविधि देखने के लिए यंत्र लगे हो 15. बड़ी मकड़ी 17. दंड देने, हानि पहुंचाने आदि का भय दिखाना 19. पाला-पोसा जाता 21. नवीन, ताजा

Solution 12276

दु	ला	र	ना	■	प्र	सं	ग
शा	■	ब	ल	वा	■	सा	ल
ला	ल	■	बं	■	गं	ध	■
■	क्ष	■	द	फा	■	न	म
प्र	णा	म	■	नू	ह	■	हा
सा	■	■	क	स	म	सा	ना
र	■	■	■	■	■	म	य
ण	■	मा	या	व	ती	■	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी, सफलता मिलेगी, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, राजनैतिक गतिविधियों का योग है, वर्ष के मध्य में दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें, यात्रा होगी,वर्ष के अन्त में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, दिनचर्या में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भौतिक सुख साधनों की उपलब्धता रहेगी, उत्तरदायित्वों को संभालना पड़ेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यापार में सफलता मिलेगी, यात्रा में कष्ट होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मित्रों से मतभेद होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को आय में सुधार होगा, धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को उन्नति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होगी, अध्ययन में रूचि रहेगी.मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का मनोबल बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, सुखी,व्यक्तित्ववान होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, कामकाज में निपुण, खेलों के प्रति रूचि रहेगी. किसी कला में उन्नति करेगा, साहित्य के क्षेत्र में रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

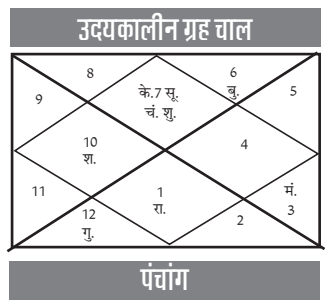

पंचांग

रा.मि. 13 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया बुधवासरे शाम 6/53, पूर्वाषाढ नक्षत्रे रात 11/12, शुभ योगे दिन 7/13, वणिज करणे सू.उ. 5/15, सू.अ. 6/45, चन्द्रचार धनु, पर्व- संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया को पूर्वाषाढ नक्षत्र के प्रभाव से अलसी, अरंडी, गुड़, खांड, बिनौला, मूँगफली, घी, तेल, में तेजी होगी, रूई, कपास से बनी वस्तुओं, चंदन के भाव में तेजी होगी. भाग्यांक 7586 है.

मेष- प्रभावशाली लोगों से संबंध बढ़ेंगे, किसी के सहयोग से निजी कार्य बनेंगे, कामकाज पूरा होगा, कोर्ट कचहरी आदि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- भावनाओं पर काबू रखें,लोग मजाक उड़ायेंगे, जीवनसाथी के व्यवहार से दुख होगा, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, खर्च की अधिकता रहेगी.

मिथुन- काम समय पर पूरा कर लें, लाभ होगा, किसी बात से गलतफ्हमी होगी, लेखनादि कार्यों में सफ्लता मिलेगी, धार्मिक कार्यों में खर्च करना पड़ सकता है.

कर्क- पूर्व में की गई मेहनत रंग लायेगी, मन में हर्ष और उत्साह रहेगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, भागदौड़ रहेगी, व्यर्थ की चिन्ता हो सकती है.

सिंह- मित्रों के साथ मनोरंजक यात्रा हो सकती है, स्वास्थ्य का ध्यान रखकर कार्य करें, पारिवारिक चिन्ता रहेगी, सोचे हुये कार्य बनेंगे.

कन्या- सकारात्मक सोच लाभकारी रहेगी, अपनों साथ उत्साह वृद्धि करायेगा, नया कार्य सामने आयेगा, अनावश्यक विवाद को टालें.

तुला- आप अपनी गलती मानकर समस्या सुलझा लेंगे, सामाजिक कार्य बनेंगे, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा, प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

वृश्चिक- पारिवारिक कलह मन अशांत कर सकता है, सोच समझकर नया कार्य करें, राजकीय कार्यों में सफ्लता मिलेगी, नौकरी में लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी.

धनु- रचनात्मक कार्यों में मौलिक सूझबूझ का लाभ मिलेगा, विकल्प लाभकारी होगा, शुभ कार्यों में खर्च होगा, नई दिशा में किया गया कार्य सफ्ल होगा.

मकर- नए समझोते लाभकारी रहेंगे, जीवनसाथी की भावनाओं का ख्याल रखें, विरोधियों का पराभव होगा, यात्रा सुखद एवं महत्वपूर्ण रहेगी.

कुम्भ- आप जिसे घाटे का सौदा समझ रहे थे, उसमें अच्छा लाभ होगा, टकराव से बचने का प्रयास करें, पारिवारिक चिन्ता रहेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

मीन- मित्रों की कहासुनी से दुख होगा, काम बनाने परिश्रम अधिक करना पडेगा, कुटुम्बियों से सुख प्राप्त होगा, मनोरंजन पूर्ण कार्यों में सफ्लता मिलेगी.

SUDOKU 7409

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7408

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7